* श्री सीतारामाभ्यां नमः *

श्री स्वामी सियारामशरणजी महाराज

श्री रूपलता जी कृत

भावना चालीसी

श्री रमण शरण पुजारी

टीकाकार:

श्री राजकिशोरीवरशरण जी महाराज

(श्री कृपाशीला जी)

श्री रहस्य प्रमोद भवन, श्री जानकीघाट।

[प्रथम बार १०००]   [मूल्य ॥) आठ आना

❀ श्री सीतारामाभ्यां नमः ❀

॥ श्री हनुमते नमः ॥

॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः ॥

समर्पण

श्री अखिल ब्रह्मांड नायकिनी नायकेश्वर श्री सीताराम जी की अहेतुकी कृपाद्वारा यह श्रीसियाराम शरण जी महाराज (श्रीरूपलताजी) कृत भावना-चालीसी मुझे श्री रामगुलाम जी द्वारा जयपुर से प्राप्त हुई थी। इस में जो आपने श्रीयुगल सरकारों के सूक्ष्मरूप से समस्त आह्निक चरित्रों का दिग्दर्शन कराया वह बड़ाही उत्तम है। उसी को सरल भाषामें अक्षरार्थ पूर्णरूपसे अष्टयाम भावना वाले भावुकों के हृदय में शीघ्र प्रवेशार्थ हुआ है, श्री दम्पति प्रेमी रसिक जनों की कृपा से श्री युगल भावना रस सन्त महा सम्पत्ति श्रीयुगल रसरसिकों के श्रीयुगल कर कमलों में यह राजकिशोरी वरशरण सकल चिन्ताहरण महाचिंतामणि अर्पण कर रहा है। (गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः) सो इसे आप सब प्रसन्नता पूर्वक सादर ग्रहण करें।

प्रार्थी:—

राज किशोरी वर शरण

परमाँनंद

॥ श्री जानकी वल्लभाय नमः ॥

श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः — श्री हनुमताय नमः

श्री रामानन्दाय नमः — श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

अथ श्री स्वामी रूपलता जी कृत

भावना चालीसी

दोहा—

प्रथम सुमिर गुरु इष्ट को, कृपा दृष्टि सुखलेत ।
चारुशील पद वन्दि वर, अष्ट याम के हेत ॥
॥ १ ॥

अर्थ—प्रथम श्री गुरुमहाराज और इष्ट देव श्री सीताराम जी एवं श्री चारुशीला जी को स्मरण करके तथा उनकी कृपा दृष्टी का लाभ लेते हुए श्रेष्ट चरणारविन्दों की बन्दना कर कें ग्रन्थकार अपना अभिप्राय प्रगट करते हैं कि उन्हें श्री सीताराम जी का आह्निक चरित्र (अष्टयाम क्रीड़ा जो वह लीला रूप से माधुर्य्यवा ऐश्वर्य्य मिश्रित सदैव नित्य श्री अवध में करते हैं) वर्णन करना है अथवा ग्रन्थकार श्री रूप लताजी इस ग्रन्थ (भावना—चालीसी) को निर्म्माण करने के पूर्व (प्रथम) श्री गुरुमहाराज तथा इष्ट देव श्री सीताराम जी को स्मरण करके उनकी अहैतु की कृपा दृष्टि का सुख लाभ करते हुये तदनंतर श्री सीताराम जी के आठों प्रहर के चरित्रों को सुलभता से निर्बिघ्नता पूर्वक पद्य मय वर्णन करने के निमित्त काव्याचार्य्य, रसाचार्य्य श्री सर्वेश्वरी चारुशीला जी के श्रेप्ठ चरणों की बन्दना करते हैं ॥१॥

बाजन लागे दुन्दु भी, घटिका दो रहिं रात।
कनकभवन की कुञ्ज में, जागीं सखीं प्रभात ॥

॥२॥

अर्थ—दो घड़ी रात्रि रहने पर राज दुन्दुभि (महल के द्वार का नगाड़ा) बजने लगती हैं जिसको सुनते ही श्री कनक भवन के अन्तर्गत कुञ्जों में रहने वालीं समस्त सखीगण प्रभात काल जानकर जाग पड़तीं हैं तथा अपने २ कृत्य से निपट कर अपनी २ सेवा सौंज लिये सेवा के निमित्त प्रस्तुत हो जातीं हैं ॥२॥

रूप-लता 'स्नान करि, संग परिकर लियखास।
चारुशीला पद बन्दि के, पहुँची सियपिय वास ॥

॥३॥

अर्थ—श्री रूपलता जी निज स्वरूप से दन्त धावन स्नानादि (वस्त्र धारण शृंगार आदि) से निवृत्त हो कर मुख्य परिकर गणों के सहित श्री चारुशीला जी की पद बन्दना करके उन्ही के आदेशानुसार श्री युगल सरकार के शयन भवन में उपस्थित हुईं अर्थात् पहुचतीं हैं ॥३॥

सुखद सेज पौंढे दोऊ, सिय वल्लभ महाराज।
चिकपरदन सों लागिके, निरखत छवि सुखसाज ॥

॥४॥

अर्थ—शयन कुञ्ज में श्री सीताराम जी युगल सरकारों को परम आनन्द मई सेज पर पौढ़े हुए देखकर सब परिकर गणों के सहित चिक परदाओं के जाल रन्ध्रों से (शयन कुञ्ज के) युगल सरकारों के परस्पर के विनोद मई सुख व सुन्दरता की सजावट को अवलोकन करतीं हैं ॥४॥

बिथुरीं अलकैं वदन पर, भ्रमर कमल रस लेत।
अरस-परस मुसुक्यावहीं, कोटि चन्द छवि देत॥

॥५॥

अर्थ—श्री युगल सरकारों के मुखारबिन्द पर अलका-वलियां इस प्रकार शोभित हो रहीं हैं मानो भौंरे कमलों से रस (मकरन्द) ले रहे हैं। दोनों सरकार परस्पर एक दूसरे को स्पर्श सुख देते व मुस्कुराते हैं। उस समय की शोभा करोड़ों चन्द्रमाओं के समान सुशोभित हो रही है।

प्यारी के भूषण वसन, प्रीतम दीन सँवार।
मुख सरोज मकरन्द को, लेत मधुर रससार॥

॥६॥

अर्थ—श्रीसिया प्यारी जी के भूषण, वस्त्र श्रीप्रीतम सरकार श्रीराम जी सम्हारते हैं, इसी प्रकार श्री पिया प्यारे जू के भूषण वस्त्र श्री प्राण प्यारी जू सम्हारती हैं। परस्पर मुख कमल की मकरन्द मधुर रस माधुरी को (महा मधुर रस सार रूप) अधरामृतरस सुख को ग्रहण करते व आनन्दित होते हैं।

युगलचन्द्र पर्य्यंक पर, अलिगणनयन चकोर।
निरखि २ प्रीतम प्रिया, रही चित्र सी ठोर॥

॥७॥

अर्थ—इस प्रकार दोनों प्राण जीवनजू युगल चन्द्रवत् सुखसेज-पर्य्यंक पर सुसोभित होरहे हैं। समस्त सखीगण अपने नेत्रोंसे चकोर के समान श्रीयुगल पिया प्रीतमको देखकर चित्रके समानतत् सुखको प्राप्त कर तद्गत व तन्मय हो एकाग्र चित्त हो रहीं हैं ॥७॥ एवं श्रीयुगल प्राण प्यारे परस्पर के तत्सुख को लेते हुए तन्मय हो रहे हैं॥

उन्मत छवि नयनन वसी, करी मङ्गला जाय।
पट फेरति जल वारि के, मधुपर्कहिं कर वाय॥

॥८॥

अर्थ—समस्त सखी गण श्री युगल छबि को निज २ नयन हृदय में बसाये हुए उन्मत्त हो रहीं हैं अतः अपने २ को सम्भाल कर जागरण के उपरान्त अर्थात् उत्थापन की प्रथम मंगल आरती कर वस्त्रादि फेर जल उतार कर मुख शुद्धि हेतु बिधि पूर्वक मधुपर्क करातीं हैं ॥८॥

उठि प्रीतम प्यारी दोउ, आये दातुन कुञ्ज।
मुखधुवाय अंगुछायके, चहुँदिशि अलिगण पुञ्ज॥

॥९॥

अर्थ—(मधुपर्कके अन्तर कोमल पावड़ों पर चरण धरते हुए युगल सरकार परिकरगणों के सहित) दोनों श्री प्राण प्रीतम व श्री प्राण प्यारी जू दन्त धावन कुञ्ज में पधारते हैं, तहाँ पर सखी जन श्री युगल प्राण प्यारे सरकारों को सुकोमल सिंहासन पर बिराजमान कराके, सुगन्धित जल से दातौन कुल्ला कराय मुख, हस्त, चरण कमलोंको धुवाय सुन्दर कोमल वस्त्र से मुख, हस्त चरणों को पोंछ चारों ओर से सखी-समूह सेवा में उपस्थित होतीं हैं ॥९॥

बल्लभ भोग अनेक विधि, करवावत सब वाल।
रुचि २ पावत नवल दोउ- हँसत हँसावत लाल॥

॥१०॥

अर्थ—दन्त धावन के उपरान्त नाना प्रकार के मिष्ठान्न, फल एवं फलाहारी वस्तुएँ सुन्दर थालों में सजाकर समस्त सखियाँ प्रत्येक वस्तु के नाम, गुण, सुख, स्वाद वर्णन करके और प्रशंसा कर २ के श्री युगल

सरकारों को पवावतीं हैं (मंगल भोग करातीं हैं) श्री युगल सरकार प्रेम पूर्वक रुचि के अनुकूल पाते हैं और स्वयं सखी वर्गों की चातुरी देख व्यंग करते हुए परस्पर हंसते हैं और समस्त सखी समाज को हँसावते हैं ॥१०॥

वीरी अतर लगाय के, धूप दीप पुनि कीन ।
युगलचन्द्र छवि जाल में, फँसे सुदृग मन मीन ॥
॥ ११ ॥

अर्थ—मंगल भोग आरोग लेने परसखीगण अचमन कराय मुख, हस्त, चरण कमल पोंछकर श्री युमल प्रिया प्रीतमजू को सुन्दर पान वीड़ियां निर्म्माण कर अर्पण करती हैं और सुगन्धित द्रव्य इत्रादि लगातीं हैं, फूल माला पहिनातीं व आदर्श दिखाकर धूप व विधिवत् आरती करतीं हैं। इस प्रकार सेवा कर चुकने के उपरान्त सम्पूर्ण सखी समाज के नेत्र व मन श्री युगल प्राण प्यारों के मुखचन्द्रमा की छवि के जाल में उलझ जाते हैं अर्थात तन्मय व तद्गत हो जातीं हैं ॥११॥

मृगमद केसर मलय वर, बहुत सुगंध मिलाय ।
उबटनकरि ललिलालको, तनद्युतिअतिछविछाय॥
॥ १२ ॥

अर्थ—वल्लभ कुञ्ज की सेवा के उपरान्त अब प्रथम स्नान हेतु श्री युगल सरकारों का उपटन कस्तूरी केशर मलयागिर चन्दन तथा नाना प्रकार की सुगन्धित ऋतानुकूल बस्तुओं से सखियोंने किया, जिससे सहज सौन्दर्य्यता में भी अत्यन्त छविमयी कान्ति श्रीयुगल लली लालजी के स्वरूपों में छा जाती है (यह उपटन स्नान कुञ्ज के अन्तर्गत सखियों ने कियाहै। आगे के दोहे से इस क्रम का सम्बन्ध जानना चाहिये) ॥१२॥

स्नान कुञ्ज की नागरी, खबर जनाई आय ।
प्रिय प्यारी सुनि उठ चलें, संग सखी समुदाय ॥
॥ १३ ॥

अर्थ—इसके उपरान्त स्नानार्थ स्नान कुञ्ज की समय-सूचि का द्वारा सङ्केत प्राप्त कर श्री युगल सरकार हर्ष पूर्वक सखी समुदाय के साथ उठ करके स्नानार्थ जाते हैं ॥१३॥

रत्न जटित चौकीन पर- राजत सुख के ऐन ।
सहचरि गण जलडारहीं- लज्जित भे रति मैन ॥
॥ १४ ॥

अर्थ—स्नान कुञ्जान्तर्गत् रत्न जड़ित चौकियों पर सुख के स्थान श्री युगल प्रिया प्रीतम बिराजमान होकर शोभित होते हैं, सहचरी गण सुगन्धित पदार्थों से मिश्रित जल छोड़तीं हैं उस समय की अद्भुत शोभा को देखकर रति व कामदेव लज्जित हो जाते हैं ॥१४॥

शुचि सरयू जल गन्ध युत- पियप्यारी अन्हवाय ।
अंग अगौछतिं सुघर अलि-चरणकमल चितलाय ॥
॥ १५ ॥

अर्थ—इस प्रकार पवित्र सुगन्धित श्री सरयूजल से श्री युगल प्रियतमों को स्नान कराके चतुर सखियाँ सुन्दर युगल अङ्गों को निर्मल स्वच्छ अङ्गौछों से पोंछकर प्रनन्नता पूर्वक श्री युगल चरण कमलों की सेवा में चित्त लगातीं हैं ॥१५॥

नख शिख भूषन वसनवर- अंग अंग पहिराय ।
युगलमाधुरी लखि अलीं- वार वार बलि जाय ॥
॥ १६ ॥

अर्थ—पुनः स्नान कुञ्ज के निकटस्थ शृंगार कुञ्ज में श्री युगल सरकारों को दिव्यासन पर विराजमान करा के नख से शिखा पर्य्यंत प्रत्येक अंग में श्रेष्ठ आभूषणों को एवं दिव्य वस्त्रों को धारण कराके समस्त सखी समूह श्री युगल सरकारों की रूप माधुरी को अवलोकन करके वार वार बलिहारी जातीं हैं, निछावर होतीं हैं एवं दृष्टि दोष निवारणार्थ राई नोन उतारतीं हैं ॥१६॥

कंचन थार कटोरियां, बाल भोग धरवाय ।
पूप सुहारी लाडुवा, तप्त जलेबी लाय ॥
॥ १७ ॥

अर्थ—शृंगार कुञ्ज के निकट कलेऊ कुञ्ज में स्थित होकर सखी गण सुन्दर स्वर्ण मयी थाल व कटोरियां में अनेक प्रकार के बालभोग की सामग्री जैसे पुवा, खाजे, लड्डू गर्मागर्म जलेबियाँ आदि श्री युगल सरकारों के सामने परोसतीं हैं ॥१७॥

खाजा खुरमा दधिवरा, षट्रस चार प्रकार ।
पावत पिय प्यारी दोऊ, करत विनोद अपार ॥
॥ १८ ॥

अर्थ—खाजा, खुरमा दहीबरा, आदि षट्रस चारों प्रकार के पक्के उपभोजन श्री प्राण प्यारे श्री प्रिया जी के सहित दोनों सरकार प्रेम पूर्वक पाते हैं तथा परस्पर अनेकों प्रकार के आनन्द दायक लीला वाक्बिलास करते हैं ॥१८॥

करि अँचवन बैठे दोऊ, रतन सिंहासन जाय ।
अतर पान वीरी लई, पुनि अलि साज बजाय ॥
॥ १६ ॥

अर्थ—प्रेम पूर्वक कलेऊ करके आचमन किया तदुपरान्त दोनों श्री युगल सरकार रत्नसिंहासन पर विराज मान हुए पुनः इत्र पान ग्रहण किया तत्पश्चात् सखियों ने सूक्ष्मतः सांगीत साहित्य का क्रम गान, वाद्य, नृत्य हाव भाव कटाक्षों के सहित प्रारम्भ किया ॥१६॥

कनकथार सजि आरती, करति चतुरि वर नारि।
छबिपर रतिपति वारिये, युगल रूप सुकुमार ॥

॥२०॥

अर्थ—गान वाद्य के उपरान्त परम प्रवीणा सखियां स्वर्ण के थाल में सुन्दर आरती सजवाकर आरती करतीं हैं। विधि पूर्वक आरती के पश्चात् श्री युगल सुकुमार सरकारों की छवि पर करोड़ों रति कामदेव का सौंदर्य निछावर हो रहा है अर्थात् करोड़ों रति कामदेवों की सुन्दरता भी हारी जा रही है (तुच्छ है) ॥२०॥

सभा कुञ्ज अनुपम बनी, पिय प्यारी तहँ आय।
चमर छत्र सूरज मुखी, लिये सखी समुदाय ॥

॥२१॥

अर्थ—सिंगार आरती होने के पश्चात् श्री युगल सरकार परिकरगणों के सहित सभा कुञ्ज में पधारते हैं। श्री सभा कुञ्जकी बनावट उपमारहित अद्भुत वनी हुई है। तिस सभा कुञ्ज में श्री प्रिया प्रीतम जू बिराजमान होते हैं सखी समूह अपनी अपनी सेवा सौंज चमर, छत्र, सूर्यमुखी आदि लेते हुये श्री युगल सरकारों की सेवा में उपस्थित हुईं ॥२१॥

बैठे सिंहासन दोऊ, रस भरि गावत तान।
निरखति सखि आनंदभरि, को करि सकै बखान।

॥२२॥

अर्थ—श्री युगल सरकार सभा भवन में स्वर्णमयी रत्न जड़ित दिव्य सिंहासन पर बिराजमान होकर रसभरी तान गाते हैं, सब सखी गण आनन्द में भरकर अपूर्व छटाको वा गायन को देखकर प्रफुल्लित हो रहीं हैं अथवा सखियां श्री युगल प्राण प्यारों की रूप माधुरी व गायन की शोभा प्रसन्नता पूर्वक देख रहीं हैं। उस समय के साहित्य गान व सजावट की शोभा का वर्णन कौन कर सकता है ॥२२॥

सतरंज चौपर गंजफा, खेलत हैं ललि लाल।
जितत जितावत परस्पर, करत अनोखे ख्याल॥

॥ २३ ॥

अर्थ—गायन के अनन्तर श्री युगल लाल लाड़िली जी विनोद मयी खेल सतरंज, चौपर, गंजफा आदि खेलते हैं परस्पर के खेल में कभी जीतते व जितवाते हैं और अपूर्व विचार युक्त विनोद कर रहे हैं ॥२३॥

राजभोग की कुञ्ज में, थार सकल सजवाय।
सखी तहाँ की आय के, बिनती करी सुहाय॥

॥ २४ ॥

अर्थ—जब राजभोग की कुञ्ज में सकल प्रकार के भोजन की सामग्रियों से थालों की सजावट हो चुकी तब वहाँ की एक सखी ने आकर श्री युगल प्राण प्यारों से विनम्र जुहार कर प्रार्थना की ॥२४॥

आय तहां भोजन किये षट्रस चार प्रकार।
विंजन की को कहि सकै शेषन सकै उचार॥

॥ २५ ॥

अर्थ—सभाभवन से श्रीभोजन कुंजमें आकर श्री युगल सरकारों ने दिव्य सुन्दर चौकियों पर विराजकर चार प्रकारके नाना भांतियों के व्यञ्ज

न को भोजन किया, जिनका कि वर्णन श्री शेषजी से भी नहीं हो सकते तब और कौन कर सकता है ॥२५॥

अचमन करि वीरी लई केशर अंग लगाय।
सुमन मालपहिरायतिय पुनिसखि अतर लगाय॥
॥२६॥

अर्थ—भोजन के उपरांत सखियों ने आचमन कराया। श्रीयुगल सरकारों ने आचमन कर चुकने पर पान वीड़ा लिये, सखियों ने मस्तक पर केशर को धारण करा के पुष्प मालाएँ पहना कर इत्रादिक सुगंधित पदार्थों से अपने श्रीयुगल प्रीतम प्यारों की सेवा की ॥२६॥

आरति थार सँवारि सखि जलपट वारत भाय।
नख शिख सीतारामछवि हृदय धरे मन लाय॥
॥२७॥

अर्थ—तदुपरान्त सखियों ने सुन्दर दिव्यथालों में आरती सवांर कर श्रीयुगल सरकारों की मध्यान्ह समय आरती की और जल पटवार करि नख से शिखा पर्य्यंत आनंदपूर्वक दर्शनकर सुन्दर छवि को हृदय में मन लगाकर धारण किया ॥ २७ ॥

सुखनिद्रा पौढे दोऊ, निरखि निरखि बलि जाह।
घटिका द्वै आराम करि, उठे जानकी नाह॥
॥ २८ ॥

अर्थ—आरती आदि भोजनोपरान्त की सेवा हो जाने पर दोनों युगल सरकार सुख मई निद्रामें मग्न हो सेज पर पधार कर पौढते भये, सखियाँ दर्शन करके बलिहारी जाती हैं। दोनों प्यारे दो घड़ी विश्राम करके श्रीजानकी कान्त श्रीप्रियाजी के सहित उठ बैठे ॥२८

मुख प्रक्षाल करि दम्पती, मधुर मिठाई खाय ।
पुनि बीरी अरु अतरलै, वन प्रमोद को जाय ॥
॥ २९ ॥

अर्थ—जागरण हो जाने पर श्रीप्रिय दम्पति मुख प्रक्षालन कर मधुर मिठाई पाकर तदुपरान्त पानवीड़ा लेकर अतर लेते हैं तब पुनः सिंगारवन होते हुये अन्तरिक्ष विमान में विराजकर प्रमोदवन को जाते हैं ।।२९।।

सरयूतट विहरनलगे, गलवहियाँ ललि लाल ।
नाच गान वहु विधि किये, साज वजाय सु वाल ॥
॥ ३० ॥

अर्थ—श्रीसरयू तट विमान से उतर कर श्रीयुगल लली लालजी परस्पर गलवहियाँ देकर विहरने लगते हैं। सुन्दर सखी गण बाजे बजातीं हैं और श्रीयुगल सरकार विविधि प्रकार से नृत्य व गायन करते हैं ॥ ३० ॥

यहि विधि केलि विहार करि, आये महलन मांहि ।
संध्या समय सु आरती, करत सखीमन चाहिं ॥
॥ ३१ ॥

अर्थ—इस प्रकार श्री सरयू जी के तट पर प्रमोदवन में आमोद प्रमोद युक्त परस्पर युगल सरकार बिहार करके विमान द्वारा सखियों के सहित कनक महल में आये। सखीगण सायंकाल का समय जानकर मन चाही आनन्द केलियाँ करती हुई सुन्दर गान वाद्य सहित आरती करतीं हैं ।।३१।।

व्यारू भोग अनेक विधि, करत लाडिली लाल ।

अँचवन करि वीरी लई- पुनि नृत्यति भईंवाल ॥

॥ ३२ ॥

अर्थ—आरती के हो जाने पर व्यारू भोग का कार्य्य-क्रम विधि पूर्वक नाना भाँति से प्रारम्भ हुआ श्रीयुगललाल लाडिलीजी ने प्रेमसहित व्यारू की तत्पश्चात् आचमन करके पान बीड़ा पाये फिर पुनः सखी समूह का नृत्य, गान, वाद्य प्रारम्भ हुआ ॥३२॥

बींन बजावत साँवरो, बंशी धुँनि सिय कीन ।
सप्त सुरनकल गानकरि- अलिगण को सुखदीन ॥

॥ ३३ ॥

अर्थ—श्री श्यामसुन्दर इस सूक्ष्म गांयन में सखियों में सम्मिलित होकर वीणाँ बजाने लगे और श्री किशोरी जी स्वयं बंशी बजाने लगीं तदुपरान्त सप्तसुरोंयुक्त सुन्दर गायनकर सखीसमूहों को सुखदेनेलगे ॥३३॥

रास रंग रासस्थली, नृत्यत युगल कुमार ।
अंशन भुजधरि साँवरो, करत कला नहिं पार ॥

॥ ३४ ॥

अर्थ—शयन कुञ्ज के सामने वृहद् रास कुञ्ज स्थल के मध्य आनन्द बिभोर होकर दोनों युगल सरकार परस्पर एक दूसरे के कंधों पर भुजाएँ धारण किये हुए अर्थात् गल बहिंयां डाले हुए नृत्य करते व अपरम्पार कला दिखाते हैं भाव यह कि सखियों से आवृत्त बीच रास-भूमि में स्थित होकर श्री युगल सरकार नाना प्रकार की कलाओं के (सहित नृत्य के विविधि भांति के भेद) दिखलाते हुये गल बहिंयां दिये हुए नृत्य करते हैं ॥३४॥

चारुशीला आदिकसखी- कोटिन नृत्यति संग ।

सबको मन पूरण कियो, शिथिल भईसबअङ्ग ॥

॥ ३५ ॥

अर्थ—श्रीचारुशीला आदिजी को आद देकर करोड़ों सखी-गण श्री युगल सरकरों के साथ नृत्य करतीं हैं किन्तु श्री युगल प्राण प्यारों ने जो समस्त सखी गणों की अभिलाषाओं को खेल करते करते पूर्ण किया। अधिक रास क्रीड़ा होने से सबके अङ्ग शिथिल हो गये हैं ।।३५।।

रत्न सिंहासन राजहीं, गल बहियाँ दियें लाल।
एकटकछवि निरखतभईं, नवल रंगीली बाल ॥

॥ ३६ ॥

अर्थ—रास क्रीड़ा समाप्त हों जाने पर दोनों सरकार गलबहियाँ दिये हुये रत्न सिंहासन पर सुशोभित हो रहे हैं उस समय समस्त नित्य नवीन अवस्थाओं वालीं बालाएँ एकटक नेत्रों से अनुपम छवि को अवलोकन करतीं हैं ॥३६॥

हुई आरती शयन की, शयन भोग कर वाय।
शयनकुञ्ज सिय पियचले,शयन कीन्ह हरषाय ॥

॥ ३७ ॥

अर्थ—पुनः शयन भोग कराकर सखियों ने विधिवत् शयन आरती की और पय पानादि के उपरान्त दोनो युगल सरकारों नें शयन कुञ्ज में जाकर सुखपूर्वक प्रसन्न्ता के साथ शयन किया।।३७।।

मधुर मधुर बाजे बजें, मधुरे शब्द सुनाय।
कोइसखि चरण पलोटहिं, कोइ मधुरेस्वरगाय ॥

॥ ३८ ॥

अर्थ—शयन निद्रा शीघ्र आ जाने व सुखपूर्वक शयन सुख के लिये मधुर२ शब्दों से बाजे बजने लगे और मधुर शब्दों को सखियाँ सुनार कर अपनीं २ सेवा में संलग्न हुई। कोई २ सखियाँ चरण के तलुओं के नीचे लोट रही हैं व कोई २ सखियाँ मधुर स्वरों से गायन करती हैं ॥३८॥

रूपलता सियपिय लखी, ललितचरण उरलाय।
युगल माधुरी रसपियत, सोसुखकिमि कहिजाय॥
॥ ३९ ॥

अर्थ—ग्रन्थकार श्रीरूपलता जी श्रीयुगल प्राण प्यारों को शयन किये हुए देखकर सुन्दर युगल सरकारों के सुकोमल चरणों को अपने हृदय में लगाकर युगल माधुरी छवि रूपी रस को पान करती हैं और महान् आनंद को प्राप्त करती हैं उस समय का सुखानंद अकथनीय है उसका वर्णन वाणी द्वारा कैसे कहा जाय ॥ ३९ ॥

चारुशिला सियकी सखी सब सखियन शिरमौर।
इनकी कृपा कटाक्षते मिलहहिंश्यामल गौर॥
॥ ४० ॥

अर्थ—श्रीग्रन्थकार श्री सियाराम शरणजी (श्रीरूपलताजी) कहतीं कि सर्वेश्वरी श्रीचारुशीला जी श्रीप्रियाजी की प्रियसखी समस्त सखियों में प्रधान हैं इन्ही की कृपा कटाक्ष से श्यामल गौर युगल मनोहर सुन्दर जोड़ी की प्राप्ती होती है और अन्त मे आशीरवादात्मक मंगला चरण रूप दोहा लिखते हैं ॥ ४० ॥

यहीभावना दिवस निशि, सेवैं जो चितलाय।
पियाप्यारी वाको मिलौं, सहल महलको जाय॥
॥ ४१ ॥

अर्थ—इस भावना को जो जन दिन रात्रि चित लगाकर स्मरण करते हुए सेवा में संलग्न रहते हैं, रहैंगे, उनको श्रीप्रिया प्रीतमजी की प्राप्ति हो कर अनायास सुगमता पूर्वक नित्य महल (धाम) की प्राप्ति होगी।

इतिश्रीस्वामी रूपलतजीकृतभावनाचालीसम्पूर्णं॥

इत्यलम्। शुभंभूयात्। श्रीसीतारामचन्द्रार्प्पर्णमस्तु

इति श्रीस्वामी रूपलताजी कृत भावना चालीसी श्री कृपाशील सियाराम शरण जी कृतारसवर्द्धिनी टीका सहिता समाप्ता ॥

रूपलता के पद कमल, वन्दौं हिय हुलसाय।
विनय भावना चालीसी जिन गाई सुखपाय॥
अष्टयाम सेवा विनय सांकेतिक सुखरास।
कृपाशील टीका कियो युगलकृपा पथ खास॥

इति

छप्पय

परम्परा को भेद, आप कोइ को नहिं दीन्हों ।
केहि सों लीन्हों मन्त्र, भाव सन्बन्ध रस भीन्हों ॥
रहे सन्त अति योग, भावना लीन रसिक बर ।
सिय पिय रस रति जुक्त भक्त भगवत गुण तत्पर ॥
आनन्द भवन निर्मान किय, हरि भक्तन आनँद करन ।
त्रय मूर्ति जीव आचार्य्य युत दोउ राजे भवभय हरन ॥

॥ १ ॥

छप्पय

गुरु दत्त नाम, सियराम शरण शरणांगत केरौ ।
महली नाम सु रूपलता रंग भवन बसेरौ ॥
भाबिक प्रबर महाँन रसिक रसकिन रत राते ।
सिथिल बसु पहर रंगे युगल रति सुख मद माते ॥
श्री युगल प्रांण प्यारी सखी चारुशील पद पद्म रति ।
कृपा शील आदेश युत सिय पिय दृढ़ सेवन सुमति ॥

॥ २ ॥

राम

श्री युगल युथ्थेश्वरी वन्दना महात्म

प्रथम श्री चारुशीला अली, तिनके पद उर धारु ।
लली लाल के मिलन को, ये प्रिय गुरू बिचारु ।।१।।
हेंमा हेम समान द्युति, पिय प्यारी रिझवारि ।
नित उठि इनको नाय शिर, मन तनु दीजै वारि ।।२।।
छेंमा छेंम करें सदां, जो सुमिरे कर नेंम ।
बढ़े लाड़ली लाल पद, प्रीति रीति सुख प्रेंम ।।३।।
अली पद्म गन्धा सुभग, भरि उर मोद उमंग ।
महल टहल में रुचि बढ़े, यह ब्रत धरै अभंग ।।४।।
सुन्दरि सखी सुलोचना, पिय की सखी उदार ।
इन्ह सुमिरे बिसरे नहीं, सिय बर नाम बिचार ।।५।।
भरी बरारोहा सखी, रूप लाड़िली लाल ।
इनके पद जल जात में, नित उठ नाइये भाल ।।६।।
सखी लक्ष्मणा उर बसें, सदा सिया रघुवीर ।
इनके सुमिरन तें मिट, जन्म मरन भव पीर ।।७।।
सुभगा सुभ गुण दिव्य को, मूल सजीवनि मूरि ।
लाल सखी ये अष्ट हैं, पिय के रहत हजूरि ।।८।।
लाल लाड़ली के निकट, ये सब रहत सनेम ।
जपै रसिक नित इन कृपा, कर्म न बाढ़े प्रेम ।।९।।
प्रथमहिं श्री प्रसाद को, बन्दौं ध्यान सप्रीति ।
इनकी कृपा कटाक्ष ते, प्रवल मोह दल जीति ।।१०।।
चन्द्रकला युग चरन को, उर धर प्रेम समेत ।

इनकी कृपा कटाक्ष ते, पावे सिया निकेत ॥११॥
बिमला के पद ध्याइये, प्रेम नेम करि नेह ।
बिनल चित्तमन शुद्ध होइ, पहुंचे सिय पिय गेह ॥१२॥
मदन कला सुमिरन किये, मदन न ब्यापै कोइ ।
बढ़ै लाड़िली लाल पद, प्रीति अमित सुख होइ ॥१३॥
विश्व मोहनी मोह को, हालहिं लेति छुड़ाइ ।
निज स्वरूप पहिचानि के, प्रीतम रूप लखाइ ॥१४॥
सुमिरि उर्मिला उर बसें, नित उठि प्रेम बढ़ाय ।
महल किंकरी सुहृद सब, प्रीत करें सुख पाय ॥१५॥
चंपकला दृग कोरि की, कृपा विलोकन देखि ।
हियपिय प्यारी ध्यःनधरि, जन्म सुफल करि लेखि ॥१६॥
रूपलता को रूप जनु, कल्प लता को फूल ।
इनसब पर प्यारी पिया, सदा रहत अनुकूल ॥१७॥
यह हैं सिय की सहचरी, अष्ट सखिन के नाम ।
जपै प्रेम सो नेम करि, पूरन होइ सब काम ॥१८॥
षोणस यह युत्थेश्वरी, पिय प्यारी के प्रान ।
जिन सेवा करि बस किए, प्रीतम प्रिया सुजान ॥१९॥
प्रात काल उठि नेम सों, सुमिरे इनके नाम ।
इनकी कृपा कटाक्षते, पावे सिय पिय धाम ॥२०॥

सेठ वंशीधर लडीवाले द्वारा—
श्री रामायण प्रेस लि०, श्रीअयोध्या जी में मुद्रित ।